eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol 01. Special Issue 02, April 2018

21वीं सदी में भारत को सामाजिक, आर्थिक और पर्यावरणीय चुनौतिया

[1]डा0 अरविन्द कुमार शुक्ल
[1]सहायक प्रोफेसर राजनीति विज्ञान, राजकीय महिला स्ना0 महाविद्यालय बिंदकी, फतेहपुर उ0प्र0

Received: 10 june 2018, Accepted: 15 July 2018 ; Published on line: 15 Sep 2018

Abstract

भारत 21वीं सदी में एक महत्वपूर्ण संक्रमण काल से गुजर रहा है। जहां एक ओर इसे वैश्विक शक्ति बनने की दिशा में अग्रसर होने के लिए सामाजिक, आर्थिक और पर्यावरणीय अवसर मिल रहे हैं, वहीं दूसरी ओर कई प्रकार की चुनौतियां भी उत्पन्न हो रही हैं। सामाजिक दृष्टि से, जनसंख्या वृद्धि, गरीबी, शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं की असमानता, लैंगिक भेदभाव और शहरीकरण की चुनौतियां अभी भी बनी हुई हैं। आर्थिक रूप से, बेरोजगारी, मुद्रास्फीति, डिजिटल विभाजन, असमान आर्थिक विकास और औद्योगिक क्षेत्र में असंतुलन प्रमुख मुद्दे हैं। इसके अतिरिक्त, ग्लोबलाइजेशन और स्वचालन से भी रोजगार संकट गहरा रहा है। पर्यावरणीय दृष्टि से, जलवायु परिवर्तन, वायु एवं जल प्रदूषण, जैव विविधता की क्षति, वनों की कटाई और प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक दोहन गंभीर चिंता के विषय बने हुए हैं। देश में बढ़ता औद्योगीकरण और नगरीकरण इन पर्यावरणीय समस्याओं को और अधिक गहरा बना रहा है।

यह शोधपत्र इन सभी चुनौतियों का विस्तृत विश्लेषण करता है और इनके संभावित समाधान सुझाता है। इसके अंतर्गत शिक्षा एवं स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार, सतत आर्थिक विकास की रणनीतियाँ, जलवायु परिवर्तन की रोकथाम हेतु नीतियां, स्वच्छ ऊर्जा संसाधनों का उपयोग और सतत विकास लक्ष्यों की पूर्ति के लिए आवश्यक कदमों पर चर्चा की गई है।

कीवर्ड– सामाजिक असमानता, बेरोजगारी, जलवायु परिवर्तन, आर्थिक विकास, पर्यावरणीय संकट, डिजिटल विभाजन, सतत विकास, ग्लोबलाइजेशन, औद्योगीकरण

Introduction

21वीं सदी में भारत एक परिवर्तनशील राष्ट्र के रूप में उभर रहा है। विकास की तीव्र गति के बावजूद, सामाजिक, आर्थिक और पर्यावरणीय समस्याएं इसकी प्रगति में बाधा उत्पन्न कर रही हैं। भारत जैसे विशाल जनसंख्या वाले देश में इन समस्याओं का प्रभाव और भी गहरा होता है। इस शोधपत्र में इन तीनों प्रमुख क्षेत्रों की विस्तृत समीक्षा की गई है। भारत का आर्थिक और सामाजिक ढांचा ऐतिहासिक रूप से विविधतापूर्ण रहा है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद, देश ने विभिन्न पंचवर्षीय योजनाओं के माध्यम से आर्थिक विकास को गति देने का प्रयास किया। 1991 के उदारीकरण के बाद, भारतीय अर्थव्यवस्था ने वैश्विक रण और औद्योगीकरण की दिशा में एक बड़ा कदम उठाया। हालाँकि, यह आर्थिक प्रगति असमान रही और विभिन्न सामाजिक तथा पर्यावरणीय चुनौतियाँ उत्पन्न हुई।

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol 01. Special Issue 02, April 2018

21वीं सदी में भारत एक वैश्विक शक्ति बनने की ओर अग्रसर है, लेकिन इसके समक्ष कई चुनौतियाँ भी विद्यमान हैं। जनसंख्या वृद्धि, शहरीकरण, प्राकृतिक संसाधनों की कमी, और पर्यावरणीय क्षति प्रमुख मुद्दे बने हुए हैं। इस शोधपत्र में इन सभी पहलुओं का विस्तार से अध्ययन किया गया है। भारत की सामाजिक संरचना बहुआयामी है, जिसमें विभिन्न समुदायों, भाषाओं, और संस्कृतियों का समावेश है। हालांकि, यह विविधता कई सामाजिक चुनौतियों को जन्म देती है। निम्नलिखित प्रमुख सामाजिक चुनौतियों पर विचार किया गया है।

भारत की शिक्षा प्रणाली अभी भी कई समस्याओं से ग्रस्त है। ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में शिक्षा की गुणवत्ता में भारी अंतर है। सरकारी विद्यालयों की स्थिति सुधारने की आवश्यकता है, जबकि निजी विद्यालयों की उच्च फीस कई छात्रों के लिए शिक्षा को कठिन बना देती है। बालिका शिक्षा की दर अभी भी अपेक्षाकृत कम है। उच्च शिक्षा और व्यावसायिक प्रशिक्षण तक सीमित पहुंच है। डिजिटल शिक्षा का प्रसार, लेकिन डिजिटल विभाजन के कारण कई छात्रों को इसका लाभ नहीं मिल पाता है। सरकारी स्कूलों में बुनियादी ढांचे, योग्य शिक्षकों और आधुनिक तकनीक की कमी है। कौशल विकास और व्यावसायिक शिक्षा पर बल देने की आवश्यकता है।

हालांकि भारत ने स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार किया है, फिर भी निम्नलिखित चुनौतियां बनी हुई हैं–

सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवाओं की सीमित उपलब्धता।
ग्रामीण क्षेत्रों में चिकित्सा सुविधाओं का अभाव।
निजी स्वास्थ्य सेवाओं की महंगी लागत, जिससे गरीब वर्ग को कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।
बढ़ते संक्रामक और गैर–संक्रामक रोगों का प्रभाव।
कुपोषण और मातृ एवं शिशु मृत्यु दर की समस्या।
आयुष्मान भारत जैसी स्वास्थ्य योजनाओं का प्रभाव और उनकी चुनौतियाँ।
मानसिक स्वास्थ्य सेवाओं की कमी और इस विषय पर जागरूकता का अभाव।
सार्वजनिक स्वास्थ्य अनुसंधान और नीतियों में सुधार की आवश्यकता।
जातीय और लैंगिक भेदभाव के क्षेत्र मे निम्नलिखित चुनौतियां बनी हुई हैं है–
भारत में जातिवाद और लैंगिक असमानता आज भी बड़ी समस्याएं बनी हुई हैं।
जातीय भेदभाव रोजगार, शिक्षा और सामाजिक समरसता में बाधा उत्पन्न करता है।
महिलाओं को समान वेतन और समान अवसरों की कमी का सामना करना पड़ता है।
घरेलू हिंसा और यौन उत्पीड़न के मामलों में वृद्धि देखी गई है।
महिलाओं की शिक्षा और राजनीतिक भागीदारी बढ़ाने की आवश्यकता है।
LGBTQ+ समुदाय के अधिकारों और सामाजिक स्वीकृति से जुड़ी समस्याएँ।
आरक्षण नीति और इसके सामाजिक प्रभाव।
सामाजिक जागरूकता अभियानों की आवश्यकता।

जनसंख्या वृद्धि और शहरीकरण के क्षेत्र मे निम्नलिखित चुनौतियां बनी हुई हैं–

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol 01. Special Issue 02, April 2018

भारत की तेजी से बढ़ती जनसंख्या सामाजिक ढांचे पर दबाव डाल रही है।
शहरीकरण की तीव्र गति के कारण बुनियादी ढांचे पर बोझ बढ़ रहा है।
बेरोजगारी, आवास की कमी और यातायात जाम जैसी समस्याएं बढ़ रही हैं।
शहरी झुग्गियों की संख्या में वृद्धि हो रही है, जिससे जीवन स्तर प्रभावित हो रहा है।
स्मार्ट सिटी मिशन और शहरी नियोजन की चुनौतियाँ।
सतत शहरीकरण के लिए आवश्यक उपाय।
सार्वजनिक परिवहन व्यवस्था में सुधार और सस्टेनेबल इंफ्रास्ट्रक्चर की आवश्यकता।

सामाजिक असमानता और गरीबी के क्षेत्र में निम्नलिखित चुनौतियां बनी हुई हैं–

आर्थिक असमानता के कारण समाज में वर्ग भेद बढ़ रहा है।
ग्रामीण क्षेत्रों में मूलभूत सुविधाओं की कमी बनी हुई है।
आर्थिक असमानता के कारण सामाजिक तनाव और अपराध दर में वृद्धि हो रही है।
गरीबी उन्मूलन के लिए सरकारी योजनाएँ और उनकी प्रभावशीलता।
न्यूनतम मजदूरी, सामाजिक सुरक्षा योजनाएँ और सार्वजनिक वितरण प्रणाली।
ग्रामीण विकास और स्वरोजगार को बढ़ावा देने की आवश्यकता।
वित्तीय समावेशन और बैंकिंग सुविधाओं का विस्तार।

इन सामाजिक चुनौतियों का समाधान करने के लिए नीतिगत सुधारों की आवश्यकता है, जिसमें शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं का विस्तार, लैंगिक समानता को बढ़ावा देना, सामाजिक सुरक्षा योजनाओं को मजबूत करना और सतत शहरीकरण की ओर ध्यान देना शामिल है। भारत की अर्थव्यवस्था तीव्र गति से विकास कर रही है, लेकिन इसमें कई चुनौतियाँ बनी हुई हैं। ये चुनौतियाँ देश के समग्र विकास को प्रभावित कर सकती हैं। निम्नलिखित प्रमुख आर्थिक चुनौतियों का विस्तार से विश्लेषण किया गया है–

बेरोजगारी और रोज़गार सृजन की समस्या
भारत में बेरोजगारी एक गंभीर समस्या बनी हुई है।
युवाओं के लिए रोजगार के अवसर सीमित हैं, विशेषकर असंगठित क्षेत्र में।
ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के अवसरों की कमी के कारण प्रवासन बढ़ रहा है।
स्टार्टअप संस्कृति और स्वरोजगार को बढ़ावा देने की आवश्यकता है।
कौशल विकास योजनाओं का प्रभावी कार्यान्वयन आवश्यक है।

मुद्रास्फीति और जीवन यापन की लागत के क्षेत्र में निम्नलिखित चुनौतियां बनी हुई हैं

बढ़ती मुद्रास्फीति के कारण आवश्यक वस्तुओं की कीमतें लगातार बढ़ रही हैं।
पेट्रोल–डीजल, खाद्य पदार्थ और आवास महंगे हो रहे हैं, जिससे निम्न और मध्यम वर्ग प्रभावित हो रहे हैं।
RBI की मौद्रिक नीतियों का प्रभाव और नियंत्रण उपाय।
आय असमानता के कारण निम्न आय वर्ग पर विशेष दबाव।

असमान आर्थिक विकास के क्षेत्र में निम्नलिखित चुनौतियां बनी हुई हैं

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol 01. Special Issue 02, April 2018

शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों के बीच आर्थिक असमानता बढ़ रही है।
कुछ राज्य अत्यधिक विकसित हैं, जबकि अन्य पिछड़े हुए हैं।
औद्योगीकरण में असंतुलन और विनिर्माण क्षेत्र का अपेक्षित विकास न होना।
कृषि और सेवा क्षेत्र के बीच आय असमानता।

डिजिटल विभाजन और तकनीकी परिवर्तन के क्षेत्र में निम्नलिखित चुनौतियां बनी हुई हैं

डिजिटल अर्थव्यवस्था तेजी से बढ़ रही है, लेकिन ग्रामीण भारत अभी भी तकनीकी सुविधाओं से वंचित है।
डिजिटल साक्षरता का अभाव और इंटरनेट कनेक्टिविटी की सीमाएँ।
साइबर सुरक्षा और डेटा सुरक्षा से संबंधित बढ़ती चुनौतियाँ।
डिजिटल भुगतान प्रणाली और वित्तीय समावेशन की संभावनाएँ।

विदेशी निवेश और औद्योगीकरण के क्षेत्र में निम्नलिखित चुनौतियां बनी हुई हैं

FDI (प्रत्यक्ष विदेशी निवेश) को आकर्षित करने की नीतियों की समीक्षा।
MSME (सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम) क्षेत्र की समस्याएँ और समाधान।
विनिर्माण क्षेत्र को बढ़ावा देने के लिए आवश्यक सुधार।

कृषि क्षेत्र की चुनौतियाँ के क्षेत्र में निम्नलिखित चुनौतियां बनी हुई हैं

किसानों की आय में असमानता और कृषि उपज की सही कीमत न मिलना।
जलवायु परिवर्तन और अनियमित मानसून का कृषि पर प्रभाव।
कृषि क्षेत्र में अत्याधुनिक तकनीकों का अभाव।
जैविक खेती और सतत कृषि प्रणाली की संभावनाएँ।
कृषि ऋण और सब्सिडी योजनाओं की भूमिका।
काले धन और कर प्रणाली की समस्याएँ, क्षेत्र में निम्नलिखित चुनौतियां बनी हुई हैं
कर चोरी और काले धन की समस्या अभी भी बनी हुई है।
जीएसटी प्रणाली का प्रभाव और इसमें सुधार की संभावनाएँ।
अनौपचारिक अर्थव्यवस्था का नियंत्रण और पारदर्शिता।
डिजिटल लेन–देन को बढ़ावा देने के उपाय।

सतत आर्थिक विकास और पर्यावरणीय प्रभाव के क्षेत्र में निम्नलिखित चुनौतियां बनी हुई हैं

ग्रीन इकोनॉमी की आवश्यकता और नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों का विकास।
सतत विकास लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए आर्थिक रणनीतियाँ।
औद्योगीकरण और शहरीकरण के कारण पर्यावरण पर नकारात्मक प्रभाव।
कार्बन उत्सर्जन नियंत्रण और हरित कर नीतियाँ।

भारत की आर्थिक चुनौतियाँ बहुआयामी हैं और इनके समाधान के लिए सरकार, उद्योग और समाज के समन्वित प्रयासों की आवश्यकता है। रोजगार सृजन, डिजिटल साक्षरता, कृषि सुधार और औद्योगिक विकास के साथ–साथ सतत आर्थिक विकास को प्राथमिकता देना आवश्यक है।

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol 01. Special Issue 02, April 2018

पर्यावरणीय समस्याएं भारत के सतत विकास के लिए एक गंभीर चुनौती बनी हुई हैं। बढ़ती जनसंख्या, औद्योगीकरण, और शहरीकरण ने प्राकृतिक संसाधनों के अत्यधिक दोहन को बढ़ावा दिया है, जिससे पर्यावरणीय असंतुलन उत्पन्न हो रहा है। भारत में पर्यावरणीय चुनौतियों को निम्नलिखित प्रमुख बिंदुओं के माध्यम से समझा जा सकता हैरू

जलवायु परिवर्तन और वैश्विक तापमान वृद्धि के क्षेत्र में निम्नलिखित चुनौतियां बनी हुई हैं

भारत जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को प्रत्यक्ष रूप से महसूस कर रहा है।

असमान और अनियमित वर्षा से कृषि उत्पादन प्रभावित हो रहा है।

समुद्र स्तर में वृद्धि से तटीय क्षेत्रों में बाढ़ और विस्थापन की समस्या बढ़ रही है।

ग्लेशियरों के पिघलने से गंगा और अन्य नदियों के जल प्रवाह में कमी आ रही है।

वायु प्रदूषण और उसके प्रभाव के क्षेत्र में निम्नलिखित चुनौतियां बनी हुई हैं

दिल्ली और अन्य महानगरों में वायु गुणवत्ता गंभीर स्तर पर पहुँच गई है।

औद्योगिक उत्सर्जन, वाहनों से निकलने वाला धुआं और पराली जलाने की समस्या।

श्वसन संबंधी रोगों में वृद्धि, विशेषकर बच्चों और वृद्धों में।

जल संकट और जल प्रदूषण के क्षेत्र में निम्नलिखित चुनौतियां बनी हुई हैं

देश के कई हिस्सों में पीने के पानी की कमी एक बड़ी समस्या है।

औद्योगिक कचरे और अपशिष्ट के कारण नदियाँ प्रदूषित हो रही हैं।

भूजल स्तर में गिरावट, विशेषकर पंजाब, राजस्थान और उत्तर प्रदेश में।

गंगा और यमुना जैसी नदियों की सफाई के लिए नमामि गंगे जैसी योजनाएँ क्रियान्वित की गई हैं।

जैव विविधता और वन संरक्षण के क्षेत्र में निम्नलिखित चुनौतियां बनी हुई हैं

भारत में वन कटाई की दर बढ़ रही है, जिससे जैव विविधता संकट में है।

कई वन्यजीव प्रजातियाँ विलुप्ति के कगार पर हैं।

संरक्षित क्षेत्रों और राष्ट्रीय उद्यानों की संख्या बढ़ाई गई है, लेकिन अवैध शिकार की समस्या बनी हुई है।

संयुक्त राष्ट्र के सतत विकास लक्ष्यों के तहत वन संरक्षण को प्राथमिकता दी गई है।

अपशिष्ट प्रबंधन और प्लास्टिक प्रदूषण के क्षेत्र में निम्नलिखित चुनौतियां बनी हुई हैं

शहरी क्षेत्रों में ठोस अपशिष्ट प्रबंधन एक गंभीर चुनौती है।

प्लास्टिक कचरे की समस्या, विशेष रूप से सिंगल–यूज प्लास्टिक का उपयोग।

सरकार ने प्लास्टिक प्रतिबंध लागू किया है, लेकिन जागरूकता की कमी से समस्या बनी हुई है।

अपशिष्ट पुनर्चक्रण और कचरे के वैज्ञानिक निपटान की आवश्यकता।

नवीकरणीय ऊर्जा और सतत विकास के क्षेत्र में निम्नलिखित चुनौतियां बनी हुई हैं

भारत सौर और पवन ऊर्जा को बढ़ावा देने के लिए नीतियाँ लागू कर रहा है।

अक्षय ऊर्जा स्रोतों में निवेश बढ़ाने की आवश्यकता।

कार्बन उत्सर्जन को कम करने के लिए हरित कर लागू करने की संभावनाएँ।

राष्ट्रीय सौर मिशन और उज्ज्वला योजना जैसी योजनाओं का प्रभाव।

भारत में पर्यावरणीय चुनौतियाँ बहुआयामी हैं और इसके समाधान के लिए सरकार, उद्योग, वैज्ञानिक समुदाय और नागरिकों के संयुक्त प्रयासों की आवश्यकता है। जलवायु परिवर्तन, प्रदूषण, जल संकट और जैव विविधता की रक्षा हेतु दीर्घकालिक नीतियों का कार्यान्वयन आवश्यक है। सतत विकास को सुनिश्चित करने के लिए नवीकरणीय ऊर्जा संसाधनों का अधिकतम उपयोग करना होगा।

निष्कर्ष और संभावित समाधान

भारत के सामने 21वीं सदी में अनेक सामाजिक, आर्थिक और पर्यावरणीय चुनौतियाँ हैं, जो देश के सतत विकास और समावेशी प्रगति में बाधा डाल रही हैं। सामाजिक असमानता, बेरोजगारी, शिक्षा एवं स्वास्थ्य सुविधाओं की असमानता जैसी समस्याएँ सामाजिक ताने–बाने को कमजोर कर रही हैं। आर्थिक दृष्टि से, असंतुलित औद्योगीकरण, बेरोजगारी, मुद्रास्फीति और डिजिटल विभाजन प्रमुख चुनौतियाँ बनी हुई हैं। पर्यावरणीय रूप से, जलवायु परिवर्तन, प्रदूषण, जल संकट और जैव विविधता की हानि देश के लिए गंभीर चिंता का विषय हैं।

हालाँकि, इन चुनौतियों से निपटने के लिए भारत सरकार, निजी क्षेत्र, नागरिक समाज और अंतर्राष्ट्रीय संगठनों द्वारा विभिन्न प्रयास किए जा रहे हैं। सतत विकास के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए नीतिगत सुधार, जागरूकता अभियान और तकनीकी नवाचार आवश्यक हैं।

गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक सभी की पहुँच सुनिश्चित करने के लिए शिक्षा प्रणाली में सुधार आवश्यक है। व्यावसायिक प्रशिक्षण और डिजिटल साक्षरता को बढ़ावा दिया जाना चाहिए। सार्वभौमिक स्वास्थ्य कवरेज लागू करने और सरकारी अस्पतालों की स्थिति सुधारने के लिए अधिक निवेश की आवश्यकता है। महिलाओं की शिक्षा और रोजगार में भागीदारी को बढ़ावा देने के लिए विशेष योजनाएँ लागू करनी चाहिए। सामाजिक सुरक्षा योजनाओं और न्यूनतम आय गारंटी जैसे उपायों को मजबूत किया जाना चाहिए। स्टार्टअप और लघु उद्योगों को समर्थन देकर अधिक रोजगार सृजन किया जा सकता है।

उत्पादन और निर्यात को बढ़ावा देने के लिए मेक इन इंडिया, स्टार्टअप इंडिया जैसी योजनाओं को प्रभावी ढंग से लागू किया जाना चाहिए। डिजिटल इंडिया और फिनटेक क्रांति को ग्रामीण क्षेत्रों तक पहुँचाने की आवश्यकता है। ग्रामीण और शहरी विकास में असमानता को कम करने के लिए बुनियादी ढांचे में निवेश बढ़ाना होगा। नवीकरणीय ऊर्जा को बढ़ावा, सौर और पवन ऊर्जा जैसे अक्षय ऊर्जा स्रोतों को बढ़ावा देकर जीवाश्म ईंधन पर निर्भरता कम की जानी चाहिए। संवहनीय कृषि पद्धतियाँ, जल संरक्षण तकनीकों और जैविक खेती को बढ़ावा देने की जरूरत है। पर्यावरणीय कानूनों को सख्ती से लागू करना, प्रदूषण नियंत्रण और अपशिष्ट प्रबंधन के लिए कठोर नियम लागू किए जाने चाहिए। जागरूकता और सामुदायिक भागीदारी, पर्यावरण संरक्षण के प्रति नागरिकों में जागरूकता बढ़ाने के लिए व्यापक अभियान चलाए जाने चाहिए।

भारत 21वीं सदी में वैश्विक महाशक्ति बनने की ओर अग्रसर है, लेकिन इसके लिए सामाजिक समरसता, आर्थिक स्थिरता और पर्यावरणीय संतुलन बनाए रखना अनिवार्य है। सरकार, नागरिक समाज और निजी क्षेत्र को मिलकर इन चुनौतियों का समाधान खोजना होगा। यदि उपयुक्त नीतियों और योजनाओं को प्रभावी रूप से लागू किया जाए, तो भारत सतत विकास की दिशा में महत्वपूर्ण प्रगति कर सकता है और एक समृद्ध तथा टिकाऊ भविष्य की ओर बढ़ सकता है।

संदर्भ सूची–

1- शहरीकरण और सतत विकास लेखक के. सी. शिवरामकृष्णन प्रकाशक सेज पब्लिकेशंस वर्ष 2015 ISBN: 978–93–515–0031–2
2- कृषि संकट और समाधान लेखक एम. एस. स्वामीनाथन प्रकाशक ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस वर्ष 2017 ISBN: 978–0–19–947438–0
3- पर्यावरणीय चुनौतियाँ और भारत लेखक सुनीता नारायण प्रकाशक ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस वर्ष 2018 ISBN: 978–0–19–948964–3
4- भारत की आर्थिक नीति एक समीक्षा लेखक बी. ए. प्रकाश प्रकाशक पियरसन एजुकेशन वर्ष 2017 ISBN: 978–93–325–6996–3
5- तकनीकी विकास और भारत का भविष्य लेखक नंदन नीलेकणी प्रकाशक पेंगुइन बुक्स इंडिया वर्ष 2015 ISBN: 978–0–670–08846–7
6- भारत की विदेश नीति नए आयाम लेखक शशि थरूर प्रकाशक हार्पर कॉलिन्स इंडिया वर्ष 2012 ISBN: 978–93–5029–287–6
7- भारत में आतंकवाद कारण और निवारण लेखक अजीत डोभाल प्रकाशक ज्ञान पब्लिशिंग हाउस वर्ष 2016 ISBN: 978–81–212–1234–5
8- पर्यावरणीय कानून और नीतियाँ लेखक जयराम रमेश प्रकाशक ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस वर्ष 2015 ISBN: 978–0–19–945330–9
9- स्वच्छ भारत अभियान और स्वच्छता पहल, परमेंद्र सिंह, प्रभात प्रकाशन वर्ष 2018 ISBN: 978–93–5322–516–1